रोजगार समाचार

महानिदेशक (प्रभारी) : के गणेशन

उपनिदेशक : दिलबाग सिंह

संपादक : डा. ममता रानी

भाषा : हिंदी

मूल्य : 8/-रुपये, वार्षिक शुल्क : 350/-रुपये

नई दिल्ली 21 – 27 अप्रैल 2012

नैदानिक अनुसंधान में उन्नति के अवसर

आयुर्विज्ञान पर सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से इस क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। नैदानिक अनुसंधान आयुर्विज्ञान का एक उप-क्षेत्र है, जिसने सूचना प्रौद्योगिकी के समर्थन से महत्वपूर्ण प्रगति की है।

नैदानिक अनुसंधान अनुप्रयुक्त अनुसंधान है। यह नैदानिक परीक्षणों के माध्यम से चिकित्सा-औषधियों, साधनों के प्रभावों को निर्धारित करने तथा रोग की पहचान करने वाले उपकरणों से संबंधित है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह एक ऐसी परीक्षण श्रृंखला है जो यह पता लगाने के लिए संचालित की जाती है कि क्या किसी चिकित्सा स्थिति के उपचार का निदान के लिए उपयोग में लाई जाने वाली औषधि या उपकरण सुरक्षित एवं प्रभावी है। नैदानिक परीक्षण विभिन्न चरणों पर पशुओं एवं मनुष्य पर किए जाते हैं।

नैदानिक परीक्षणों के चरणों में मनुष्य, स्वस्थ स्वयं-सेवी तथा किसी विशेष रोग से पीड़ित मरीज शामिल होते हैं। ये परीक्षण उच्चतम मानकों पर किए जाने चाहिए। नैदानिक अनुसंधान, परीक्षण करने के लिए महा औषधि नियंत्रक (भारत) एवं एथिक्स कमेटी से अनुमोदन लेने के बाद ही शुरू किए जाते हैं। ये परीक्षण अच्छी नैदानिक प्रैक्टिस के दिशा-निर्देशों के अनुसार ही किए जाने चाहिए, ताकि नैदानिक परीक्षण का स्तर बनाए रखा जा सके। ये कार्य-उपाय स्वयं-सेवियों तथा मरीजों की सुरक्षा बनाए रखने और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए किए जाते हैं।

विस्तृत विवरण के लिए क्लिक करें- www.rojgarsamachar.gov.in